ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 351-356

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

श्रीरामचरितमानस में वर्णित शैक्षणिक सार तत्वों की वर्तमान में प्रासंगिकता

अर्चना पाण्डेय

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्यामेश्वर महाविद्यालय सिकरीगंज– गोरखपुर, (उ0प्र0) भारत

Received- 23.11.2019, Revised- 27.11.2019, Accepted - 02.12.2019 E-mail: - 76archana01@gmail.com

सारांश : ***आज समाज का प्रत्येक वर्ग एक ओर गहन आध्यात्मिक चिंतन के निष्कलुष स्त्रोत से उत्पन्न हमारे परंपरागत संस्कारों से जुड़ा हुआ है, तो दूसरी ओर वैज्ञानिक आविष्कारों के परिणामस्वरुप पाश्चात्य मान्यताओं एंव भौतिक आर्कषणों से ग्रसित है। इस प्रकार आज आवश्यकता एक स्वस्थ प्रगतिशील युगसापेक्ष एवं उदार शिक्षादर्शन की रुपरेखा तैयार करने की है, जो सभी प्रकार के असंतुलन को समाप्त करके परम्परागत सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण की लहर से उत्पन्न मान्यताओं के बीच संतुलन स्थापित कर सके। इस दृष्टिकोण से श्रीरामचरितमानस में वर्णित शैक्षिक सार तत्व वर्तमान समय में अपनी प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध करते हैं।***

कुंजीभूत शब्द– संश्लेषण–विश्लेषण, प्रासंगिक, आध्यात्मिक, ज्वलंत, विध्वंसापी, आबद्ध, तांडव, मान्यताओं ।

भारत वर्ष अतीत काल से ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर, साहित्य सृजन, शैक्षिक क्रियाकलापों तथा आर्थिक समृद्धि के लिए विश्वविख्यात रहा है। भारत के उत्कृष्ट अध्ययन केन्द्रों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेकानेक विदेशियों के भारत आने का उल्लेख इतिहास के पन्नों में विद्यमान है। प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था में सबसे उन्नत एव उत्कृष्ट थी। लेकिन कालान्तर में विदेशी शासकों के शासन प्रणाली ने न केवल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावित किया वरन् यहाँ की शिक्षा प्रणाली में भी अनेक परिवर्तन किए। एक ओर जहाँ मुस्लिम काल में शिक्षा का उद्देश्य इस्लाम धर्म एवं संस्कृति का प्रचार प्रसार करना था, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश शासकों ने भी शिक्षा को अपने आवश्यकतानुसार परिवर्तित करते हुए एक ऐसी शैक्षिक नीति का निर्माण किया जिसका उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना था जो शरीर से भारतीय हों किन्तु मन एवं व्यवहार से अंग्रेज हों।

स्वाधीनता के पश्चात् हमारी शिक्षाप्रणाली को देश की आवश्यकतानुसार निर्धारित करने के लिए अनेक आयोगों की नियुक्ति की गई तथा कई शिक्षा नीतियों का निर्माण किया गया जिसके परिणामस्वरुप शिक्षा का संख्यात्मक विस्तार तो हुआ परंतु गुणवता का निरंतर ह्रास होता गया और शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई। बेरोजगाारी के करण समाज में गरीबी, अशिक्षा, अनैतिकता, हिंसा जैसी समस्याये विकराल रूप लेने लगी। भारतीय शिक्षाशास्त्रीयों ने यह अनुभव किया कि भारतीय शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु इसे पुनः प्राचीन भारतीय नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित करना आवश्यक है।

श्रीरामचरितमानस के संश्लेषण और विश्लेषण के आधार पर हम यह कह सकते है कि इसमें वर्णित नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों एवं आदर्शों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करके न केवल भारतीय शिक्षा के खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त किया जा सकता है वरन् वर्तमान शिक्षा–प्रणाली की समस्याओं का भी सफलतापूर्वक समाधान किया जा सकता है।

विज्ञान से पूर्णरूपेण प्रभावित आज की शिक्षा नित नए–नए आविष्कारों की जननी है परन्तु जहाँ एक और ये आविष्कार हमारे सुख सुविधाओं में सहायक हैं वहीं दूसरी ओर अणुबम, परमाणु बम तथा विध्वंसकारी अस्त्रों का आविष्कार भावी युद्ध में शीघ्रताशीघ्र मानव संहार के लिए उत्तरदायी हैं। जिससे अप्रत्यक्ष रुप से नरसंहार एवं आतंकवाद को प्रोत्साहन मिल रहा है। ऐसी स्थिति में श्रीरामचरितमानस में वर्णित धर्म और नैतिकता पर आधारित शिक्षा लोगों में बंधुत्व की भावना उत्पन्न करने में सहायक है।

आधुनिक युग में नगरीकरण के प्रभाव के कारण सभी व्यक्तियों में नगरों में निवास करने की प्रवृति प्रबल हो गई है, ऐसी स्थिति में आज के शिक्षण संस्थाओं की नगरों से पृथकता सम्भव नहीं है। नगरों में स्थित होने के कारण शिक्षण संस्थाएँ तथा छात्र जीवन नगरों की सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थिति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

शिक्षण संस्थाओं को नगर के कोलाहल और दूषित वातावरण से मुक्त करने के लिए इनकी स्थापना मानस में वर्णित गुरूकुल की भाँति किसी शांत, स्वच्छ और प्राकृत्तिक वातावरण में किया जा सकता है। ऐसे प्राकृत्तिक वातावरण में स्थित शिक्षण सस्थाएँ न केवल छात्रों के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

शारीरिक और मानसिक विकास के वृद्धि में योगदान देंगी वरन् छात्रों को नगरों के राजनीतिक कुचक्रों और अवांछनीय प्रवृत्तियों से भी रक्षा करेंगी।

श्रीरामचरितमानस में वर्णित शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत धर्म को अत्यधिक प्राथमिकता दी गई है। जो लोगों में मानवीय, नैतिक एवं सामाजिक गुणों विकास में सहायक होता है। वर्तमान शिक्षा में धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों की अपेक्षा भौतिक तथा वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है परिणामस्वरुप देश में चारो ओर रोग, द्वेष, कलह, संघर्ष, अशांति का भयानक वातावरण बना हुआ है। यही कारण है कि समय–समय पर अनेक आयोगों के द्वारा पाठ्यक्रम में धार्मिक तथा नैतिक विषयों के समावेश करने का सुझाव दिया गया है।

आज आतंकवाद एक विश्वव्यापी संकट एवं दारूण विपत्ति बन गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने बहुत पहले इस संकट को पहचान लिया तथा आतंकवादी को निसिचर शब्द से संबोधित किया। तुलसीदास जी के अनुसार निसिचर कोई जाति या धर्म विशेष न होकर जो निम्न कार्यो को करे उसे निसिचर कहा जा सकता है।

करहिं उपद्रव असुर निकाया। नाना रुप धरहिं करि माया।।
जेहि जेहि देष धेनु द्विज पावहिं। नगर गांव पुर आग लगावहिं।।
बाढ़े खल चहें ओर जुआरा। जे लंपट पर धन पर दारा।।
जिन्ह के यह आचरण भवानी। ते जानहुं निसिचर सब प्रानी।।

इस प्रकार कवि ने इस ज्वलंत समस्या को किसी विशेष जाति या धर्म से न जोड़कर अनैतिक तथा हिंसात्मक कार्य करने वाले व्यक्तियों को इस श्रेणी में रखकर समाज में होनेवाले धार्मिक संघर्षो के समापन में अपना बहुमूल्य योगदान देकर अपनी प्रासंगिकता स्वंय सिद्ध कर दी है।

आदर्श पारिवारिक जीवन की सुखमयता, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि के लिए श्रीरामचरितमानस में वर्णित आदर्श पारिवारिक जीवन की शिक्षा भी वर्तमान समय में निःसन्देह रुप से प्रासंगिक है। नायक श्रीराम के माध्यम से कवि ने जनसाधारण को एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति के कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का बोध कराया है। अपने भाईयों के प्रति दुर्व्यवहार के कारण बालि तथा रावण का विनाश हुआ और भाई लक्ष्मण और भरत के साथ सद्व्यवहार एवं प्रेम के कारण राम को विजय मिली। इस संदेश के द्वारा कवि ने वर्तमान समाज में धन सम्पत्ति के लिए भाई–भाई में होनेवाले आपसी कलह एवं द्वेश आदि को दूर करने का प्रयास किया है।

श्रीरामचरितमानस के अंर्तगत राम के जीवन का आदर्श प्रस्तुत करके जनसाधारण को यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि त्यागपूर्वक जीवनयापन करते हुए प्रत्येक सुख–दुख का डटकर सामना करना चाहिए। आज के भौतिकवादी युग में गोस्वामी जी द्वारा प्रस्तुत राम का त्यागपूर्ण आदर्श निश्चय ही प्रेरणा का स्त्रोत है।

वैवाहिक जीवन में एक पत्नीव्रत के जिस आदर्श भावना को गोस्वामी जी ने दृढता के साथ स्वीकार किया है, उसके द्वारा वर्तमान समाज में न केवल स्त्रियों के प्रति आदर की भावना का विकास होगा वरन् समाज में नैतिकता तथा राम राज्य की स्थापना में सहायता मिलेगी। पढ़ी लिखी एवं उच्च शिक्षित महिला वर्ग की अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से विमुखता एवं शारीरिक श्रम के प्रति हेय दृष्टिकोण के कारण पारिवारिक समस्याएँ देखने को मिल रही है। सीता जी के माध्यम से जो आदर्श प्रतिष्ठित किया है उससे आदर्श स्त्री धर्म की शिक्षा मिलती है तथा उनमें अपने कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के निर्वाह की प्रेरणा मिलती है। यथा–

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी। विपुल सदा सेवा विधि गुनी।।
निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई ।।
7/23/5

उपर्युक्त विचार प्रस्तुत करके कवि ने उच्च शिक्षित एवं उच्च पदों पर आसीन स्त्री वर्ग में अपने दैनिक कार्यो को स्वंय करने तथा शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान की भावना को विकसित करने का प्रयास किया है।

मानसकार ने अपने नायक को गुरू आश्रम में सैन्य तथा युद्ध प्रशिक्षण प्रदान करने का विवरण प्रस्तुत करके यह स्पष्ट कर दिया है कि पाठ्यक्रम में इन विषयों के समावेष से छात्र विद्यार्थी जीवन में ही ज्ञान के साथ–साथ युद्ध कला में भी निपुण हो जाते थे। वर्तमान समय में भी NCC, सैनिक स्कूल आदि के माध्यम से छात्रों को शिक्षा के साथ–साथ सैन्य प्रशिक्षण में निपुण किया जाता है। ऐसी शिक्षा प्राप्त नागरिक संकट के समय अपने देश की सुरक्षा का कार्य को सफलतापूर्वक कर सकेंगे।

शासक के रुप में श्री राम द्वारा स्थापित रामराज्य हमारे राजनीतिक जीवन का पथप्रदर्शक हो सकती है। रामराज्य में शासक प्रशासन कार्य को अपना कर्त्तव्य समझकर सम्पादित करते हैं। प्रत्येक प्रबंधक या प्रशासन काम, क्रोध, लोभ, मोह से मुक्त हो और श्री रामचरितमानस के नायक के भाँति सेवा भाव से शासन कार्य का संचालन करे जिससे उसके लिए भी यह कहा जा सके कि–

नहिंन राम राज के भूखे। धर्म धुरोन विषय सब रुखे।।

तभी हमारा राष्ट्र निर्माण कार्य यथेष्ट रुप में सम्पादित होगा। मानव सम्बन्धों को धनिष्ठता प्रदान करने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

के लिए पारस्परिक स्नेह औा सम्मान की भावना का होना अति आवश्यक है। छात्र तभी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं जब शिक्षक और छात्र दोनों अध्ययन और अध्यापन की प्रक्रिया में रूचि लें तथा दोनों श्रद्धा और प्रेम के बंधन में आबद्ध हों। यह सत्य है कि आज के छात्र और अध्यापक प्राचीन युग के आदर्श पर नहीं पहुँच सकते हैं, लेकिन फिर भी दृढ़ निश्चय से उसकी ओर अग्रसर होकर बहुत कुछ सफलता प्राप्त किया जा सकता है। मानस में वर्णित गुरु शिष्य सम्बन्धों के आदर्श के प्रति निष्ठावान बन कर तथा शिक्षक सरस्वती साधना में लीन होकर पुनः प्राचीन आदर्शों की स्थापना कर सकते हैं।

अनुशासन का व्यक्ति के जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है। अनुशासन प्रत्येक देश और प्रत्येक समाज के लिए सबसे अमूल्य निधि है। श्री रामचरितमानस में कवि ने अपने नायक श्री राम के माध्यम से जिस प्रकार की अनुशासन की भावना को प्रदर्शित किया है वह विश्वविख्यात है, लेकिन आज का वातावरण अत्यंत विषम हो चुका है और अनुशासनहीनता का तांडव सर्वत्र व्याप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में छात्रों में स्वानुशासन एवं आत्मानुशासन विकसित करने के लिए गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य आदि जैसे अनुकरणीय शिक्षक की आवश्यकता है जिनके तेजस्वी व्यक्तित्व के आगे छात्र स्वंय नत–मस्तक हो जाएं लेकिन साथ ही अनुशासन की यह विधि भी–

विनय न मानत जलधि जड़। गए तीनि दिन बीति।।
बोले राम सकोप तब। भय बिनु होइ न प्रीति।।

स्वेछाचारी तथा निरंकुश परिस्थिति के लिए उपयोगी है।

विभिन्न दृष्टिकोणों से श्री रामचरितमानस का अध्ययन करने के पष्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि आज सफल एवं आदर्श मानवता के लिए, सदाचार की शिक्षा के लिए, कर्तव्यज्ञान की अनुभूति के लिए, आदर्श परिवार, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण के लिए तथा विश्व कल्याण के लिए श्री रामचरितमानस अनुपम एवं उपयोगी ग्रंथ है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारा उचित मार्गदर्शन करता है। इस ग्रंथ में सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आलौकिक जीवन का सुंदर प्रस्तुतीकरण किया गया है। जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो इससे अछूता हो। यही कारण है कि आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी सुख, शांति और प्रेम का प्रसार करने के लिए श्री रामचरितमानस में दी गई शिक्षा आज भी प्रासंगिक है। श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी के अनुसार.....

"किसी भी साहित्य में कोई भी ऐसा ग्रंथ नहीं है जो श्री रामचरितमानस के समान लोकप्रिय और प्रासंगिक हो और जिसका धनी गरीब सभी समान रुप से आदर करते हों। सैकड़ों वर्ष पूर्व यह ग्रंथ लिखा गया, परन्तु आज भी इसकी प्राण–पूरक प्रेरणा और आनंदविधायिनी मधुरता ऐसी है कि संसार के किसी भी साहित्य में वह खोजे नहीं मिलती। भारतवर्ष में ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जिसने बचपन में रामायण की महान् घटनाओं तथा दिव्य भावों से प्रेरणा न पायी हो।"

उपर्युक्त वर्णन पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मानस के अंर्तगत लौकिक–पारलौकिक, वाह्य–आन्तरिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ज्ञान उपलब्ध है। यदि मानस में वर्णित शिक्षा को वर्तमान में व्यक्ति अपने जीवन के सभी पक्षों पर प्रयुक्त करे तो एक सफल सुखी एवं संतोषजनक जीवन की प्राप्ति हो सकती है। श्रीरामचरितमानस के आदर्श न केवल सामान्य व्यक्ति के लिए वरन् छात्र, शिक्षक, प्रशासक एवं सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र, सम्पूर्ण विश्व के लिए उपयोगी एवं कल्याणकारी है तथा इसको अपनाकर न केवल भारत में वरन् सम्पूर्ण विश्व में हमें रामराज्य की झलक देखने को मिल सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, बलदेव प्रसाद .....भारतीय संस्कृति को गोस्वामी तुलसीदास का योगदान, संस्करण–1953, पृष्ठ संख्या–42.
2. मिश्र, भगीरथ..... तुलसी रसायन, द्वितीय संस्करण।
3. मुखर्जी, श्यामा प्रसाद ..... मानसांक खंड–1, वी0 सी0 कलकत्ता वि0 वि0, पृष्ठ संख्या–886.
4. चटर्जी, सी0 ..... 1958 उपनिषदों के अनुसार वर्णित प्राचीन हिन्दू शिक्षा, पी0–एच0डी0, शिक्षा शास्त्र।